उपसंहार

मिथक इस सृष्टि में आदि मानव के जन्म से ही व्याप्त है। मनुष्य की आतंरिक व बाह्य दोनों परिस्थितियों से मिथक का जन्म हुआ। प्रत्येक देश की संस्कृति और सभ्यता के विकास में मिथक का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। मिथक युगीन परिवर्तन को अपने में समाहित कर अपने स्वरूप को बदलते रहते हैं। मिथक के सम्बन्ध में अनेक अवधारणायें प्रचलित हैं जैसे किसी ने मिथक के धार्मिक पक्ष पर अधिक बल दिया किसी ने मिथक को प्रकृति के रहस्य को स्पष्ट करने का माध्यम स्वीकार किया है किसी ने इसे जनसमूह का अटूट विश्वास माना है और किसी ने इसे आदि मानव के मस्तिष्क की उपज माना है। मिथक अत्यंत विस्तृत विषय है इसलिए इसकी कोई निश्चित परिभाषा नहीं हो सकती, यह वह कथा है जो किसी समुदाय द्वारा सत्य मानी जाती है किंतु सत्य की अवधारणा सदैव एक सी नहीं रहती। प्रसंगानुकूल इसके स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है जैसे 'महाभारत' के पात्र युधिष्ठिर को कुछ साहित्यकारों ने धर्म का प्रतीक माना तो कुछ ने जीवन निवृत्ति का और किसी ने उन्हें लोक की चिंता न करने वाले शासक के रूप में चित्रित किया है। इसी प्रकार कृष्ण का चरित्र भी युगीन परिवर्तन के साथ बदलता रहता है। उनके जीवन के अनेकानेक पक्ष हैं। कभी वह गोकुल के नटखट गिरधारी रूप में सामने आते हैं जिसमें वह गाय चराते हैं, गोपिकाओं को अपनी मुरली की धुन सुनाते हैं, रास रचाते हैं, सबके प्यारे हैं। 'भक्तिकाल', 'रीतिकाल' में इनके इसी रूप का वर्णन देखने को मिलता है। आधुनिक काल तक आते-आते इनके जीवन के एक और पक्ष को लेखकों ने उजागर किया वह है, इनका राजनैतिक पक्ष। जिसके बल पर उन्होंने बिना अस्त्र-शस्त्र उठाए पांडवों को विजयी घोषित करवाया था।

मिथक के लिए हिंदी में पुराकथा, आप्तवचन, अतर्क्यकथन, गल्पकथा, धर्मगाथा, आदि शब्द प्रचलित हैं। अंग्रेजी में 'myth' यूनानी में 'मायथोस' संस्कृत में 'मिथ्या या कपोल कथा' आदि की संज्ञा दी गयी है। विश्व का कोई भी साहित्य अपने देश की मिथकीय परम्पराओं से अछूता नहीं है । साहित्य

मानव समाज की सामूहिक चितवृत्ति का प्रतिबिंब होता है। साहित्यकार बदलते समाज परिस्थितियों, स्वरूप व समस्याओं को प्रभावी ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए मिथकों का प्रयोग करते आए हैं किन्तु आदिकालीन, रीतिकालीन, भक्तिकालीन साहित्य में मिथक 'मिथक रूप' में ही उपस्थित थे। आधुनिक युग में मिथक विचार अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम बना। मिथक का पुनर्सृजन कर उसका आधुनिकीकरण किया जा रहा है। मिथकीय ग्रंथ 'महाभारत', 'पुराण', 'उपनिषद', 'रामायण' आदि मिथकीय चरित्र जैसे कृष्ण, राम, सीता, राधा, नचिकेता, शिव-पार्वती, युधिष्ठिर आदि के स्वरूप में समय के साथ परिवर्तन कर उन्हें नवीन संदर्भों में उजागर किया गया है। मिथकीय आख्यानों में आधुनिक संभावनाओं की खोज निरंतर होती रहती है।

प्राय: यह देखने को मिलता है कि आधुनिक कथाकारों ने 'महाभारत' के अप्रकाशित अंश को प्रकाशित करने की अपेक्षा उन्हीं विशिष्ट अंशों और सार्थक संदर्भों की ओर ध्यान दिया जो समकालीन जीवन को उद्घाटित करते हैं किन्तु काशी नाथ सिंह ने 'महाभारत' कथा के उस अंश को 'उपसंहार' का आधार बनाया जिसके संबंध में अधिकतर लोग अपरिचित हैं। आम तौर पर लोग महाभारत युद्ध तक के ही कृष्ण को जानते हैं, लेकिन युद्धोपरांत उनके जीवन में क्या परिवर्तन हुआ? और द्वारका का विनाश क्यों हुआ उसके अवसान के कारण क्या थे? कृष्ण द्वारा दिये गए कर्म के उपदेश की नवीन व्याख्या को प्रस्तुत करते हैं। जिसका वर्णन कृष्ण स्वयं करते हुए नजर आते हैं। फल की अपेक्षा किए बिना कोई भी कार्य समपन्न नहीं हो सकता। कर्म में सदैव फल निहित होता है। इसके साथ ही ईश्वर के स्वरूप की परंपरागत परिभाषा को ध्वस्त कर ईश्वर को मनुष्य के श्रेष्ठतम का प्रकाश घोषित किया है। कृष्ण को अलौकिक पुरुष मानने के स्थान पर उन्हें लौकिक धरालत पर परखने का प्रयास किया है इस प्रकार इसमें कृष्ण जैसे मिथकीय पात्र को आधुनिक समय के सिद्धांतों और तर्कों की कसौटी पर परखने का प्रयास किया गया है।

उपसंहार का शाब्दिक अर्थ होता है किसी भी विषय का सार प्रस्तुत करना। 'उपसंहार' संपूर्ण महाभारत का सार प्रतीत होता है, जिसमें आधुनिक संदर्भ के अनेक सूत्र जुड़े हुए हैं। आज पूरा विश्व भाईचारा, बंधुत्व, सौहार्द को छोड़ कर युद्ध की आग में झुलस रहा है। समाज की विभिन्न परिस्थितियों (सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक और राजनैतिक) का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है । कृष्ण अपने परंपरागत मिथकीय चरित्र से भिन्न यहाँ एक अत्यंत साधारण मनुष्य की भाँति हैं, जो विभिन्न मानसिक द्वंदों से घिरे हुए हैं वह अवसाद, एकाकीपन तथा अनिन्द्रा के शिकार होते हैं और अंत में एक सामान्य मनुष्य की भाँति मृत्यु को प्राप्त हो जाते है। उनके व्यक्तित्व में ईश्वरीय झलक से अधिक समकालीन मनुष्य की झलक दिखाई देती है। जिस प्रकार आज मनुष्य भौतिक समृद्धि के लिए रिश्ते-नातों को छोड़ कर मानवीय मूल्यों को त्याग कर सफलता प्राप्त करता है और अंत में कृष्ण की तरह एकाकीपन की पीड़ा से गुजरता है ।

'उपसंहार' में वैदिक युग से चले आ रहे अनेक तथ्यों, विचारों को सीधे-सीधे स्वीकार नहीं किया गया अपितु उनका पुनर्मूल्यांकन किया गया है। 'महाभारत' में कृष्ण के द्वारा दिये गए उपदेशों को काशीनाथ सिंह ने बड़ी सहजता से कटघरे में खड़ा किया है। कृष्ण द्वारा महाभारत युद्ध के लिए अपनी सेना को कौरवों के पक्ष में करना और स्वयं का पांडवों के पक्ष में होना किस प्रकार घातक सिद्ध होता है, उनके इस निर्णय से सम्पूर्ण द्वारका का विनाश हो जाता है। कृष्ण द्वारा की गई राजनीति और उनके द्वारा लिए गए निर्णयों के माध्यम से आज के समय की राजतंत्र की प्रवृत्ति का वि-मिथकीयकरण काशीनाथ सिंह ने किया है। इसकी सफलता इस बात में निहित है कि यह उन लोगों को धार्मिक संकीर्णता से बाहर लाने का भी प्रयास करता है, जो विषय की उपेक्षा के कारण धार्मिक अंधविश्वासों और कट्टरता की ओर जाते रहे है। इसके साथ ही समाज को वर्ण संकीर्णता से बाहर लाने का प्रयास करता है ।

महाभारत युद्ध में यदि देखा जाए तो यह पहली बार हुआ कि राजा जीत गया और प्रजा हार गई। महाभारत युद्ध के इस पहलू के संबंध में शायद ही पहले किसी रचनाकार ने अपनी कलम चलाई हो। जिस द्वारका को बसाने के लिए उन्होंने जरासंध पर आक्रमण किया। अहंकारी, बर्बर शासकों और दानवों को समाप्त करने के लिए प्रागज्योतिषपुर (असम) तक गए नरकासुर की कैद से सौलह हजार युवतियों को मुक्त कराया किन्तु बाद में उसी द्वारका को डुबाने का कारण भी बन गए। ‘उपसंहार’ ऐसी ही कई नवीन उद्भावनाओं को प्रस्तुत करता है और समाज को एक नवीन दृष्टिकोण भी प्राप्त करता है। कृष्ण जैसे विश्व विख्यात अलौकिक पुरुष (मिथकीय चरित्र) की कथा को आधुनिक रूप में प्रस्तुत किया है जो कृष्ण से संबंधित पुरानी परंपरागत आस्था, विश्वास और उनके द्वारा किए गए कार्यों का नवीनीकरण करती हुई आज के समय की विडंबनाओं और विसंगतियों को प्रस्तुत करती है।

आज के आधुनिक युग में भारतीय समाज संत्रास जैसी समस्या से गुजर रहा है। जीवन में विघटन, परिवार से विघटन, तनाव, अकेलापन, ऊब, पराजय के कारण व्यक्ति अपने को संत्रस्त पाता है। विविध परिस्थितियों में व्याप्त विषमताओं के कारण वह स्वयं को पराजित अनुभव करता है। जनमानस में कुंठा, हताश, निराशा, असुरक्षा, राजनीतिक, आर्थिक अस्थिरता, भ्रष्टाचार जैसे समस्याओं से घिरा हुआ है और आधुनिक मनुष्य इन समस्याओं से निरंतर संघर्ष करता रहता है। यांत्रिकता, बौद्धिकता और वैज्ञानिक दृष्टिकोण के कारण मनुष्य की जीवन शैली में परिवर्तन हुआ। इसके साथ ही मानवीय संवेदनाएं लुप्त होती जा रही है,और आज भी धर्म और ईश्वर के नाम पर बहुत से अंधविश्वास फैले हुए हैं। इन सभी समस्याओं का चित्रण उपन्यास में मिथक के माध्यम से किया गया है।

‘उपसंहार’ में वर्णित कथा जहां एक ओर महाभारत कथा को पुन: व्याख्यायित करने की मांग करती प्रतीत होती है वहीं दूसरी ओर यही घटनाएँ आज के समय व समाज को उद्घाटित करती नजर आती है। महाभारत युद्ध कथा मात्र नहीं है वस्तुत: वह व्यक्ति और समाज की गाथा है। युद्ध उसके मध्य में

है। युद्ध से पूर्व वे कारण और परिस्थितियां हैं जो युद्ध तक ले जाती हैं और युद्ध के पश्चात पनपी परिस्थितियों तथा मनोविकारों के कारण है मनुष्य युद्धक मन: स्थिति से ऊपर उठने के लिए सुख और शांति प्राप्त करने की यात्रा प्रारम्भ करता है। 'उपसंहार' में युद्धोप्रांत जिस सुख शांति की प्राप्ति होनी चाहिए थी क्या वह प्राप्त हुई? क्या सचमुच वह धर्म युद्ध था? युद्ध में जो लोग मृत्यु को प्राप्त हुए क्या वे सभी अपराधी थे? कृष्ण स्वयं इन सवालों से जूझते नजर आते हैं, इसमें गोकुल और मथुरा का अंश कम द्वारका का अधिक है। यह द्वारका को बनाने में कृष्ण की क्या भूमिका थी और उसके विनाश में वह क्या भूमिका निभाते हैं ? किस प्रकार कृष्ण द्वारा युद्ध निर्णय का एक क्षण पूरी द्वारका का विनाश कर देता है कृष्ण यहाँ लोक सेवक के रूप में भी नजर आते हैं वहीं उसी लोक की अनदेखी करने का भी उन पर आरोप लगाया गया है। इन्हीं सब प्रश्नों को इसमें उठाया गया है।

कृष्ण कथा के माध्यम से लेखक मानवता के शाश्वत प्रश्नों से साक्षात्कार करता है और अपने समाज, देश-विदेश आदि की समकालीन विसंगतियों से पाठक को परिचित करता है। काशीनाथ सिंह ने कृष्ण की परंपरागत कथा को आधार बनाकर नवीन युगीन संदर्भ के साथ रूपायित किया है , अपने बाहर और भीतर के तनाव अंतर्विरोधों और चुनौतियों को स्वीकार करते हुए अपने युग की समस्याओं अपने युग की कथा को कृष्ण कथा के माध्यम से अपने युग के लोगों तक पहुँचाने की कोशिश की है। इसलिए उन्होंने पुरातन मिथक को नए रंग से उकेर कर कथा की घटनाओं तथा चरित्रों को समकालीन मनोवैज्ञानिक चिंतन तथा संस्कृति को उजागर किया है। इसमें 'महाभारत'की कुछ घटनाओं की केवल सूचना भर दी है। 'जरासंध वध', 'कंस-वध', 'दुर्योधन व भीम युद्ध', 'द्रौपदी चीर हरण' आदि किन्तु यह कृष्ण कथा का विकास करती प्रतीत होती है। शिल्प की दृष्टि से भी यह उपन्यास नवीनता लिए हुये है। इसमें गद्य की भाषा को पद्य में लिखने की नवीन तकनीक का प्रयोग किया गया है, किन्तु कथा विन्यास में कहीं भी कोई दुरुहता प्रतीत नहीं होती। अतः यह उपन्यास 'महाभारत' कथा का पुनर्सृजन करता है,जो

कथ्य और शिल्प दोनों ही दृष्टि से आधुनिक प्रतीत होता है। इसके लिए काशीनाथ जी ने बहुत से अर्वाचीन ग्रन्थों का सहारा लिया है, जिसे उन्होंने आधुनिकता का जामा पहनाकर प्रस्तुत किया है। मिथक की भी यही प्रासंगिकता है, समय के साथ उनके स्वरूप में परिवर्तन होता रहता है। पौराणिक पात्रों के माध्यम से समसामयिक घटनाओं तथा समस्याओं को नवीन भाव बोध के साथ प्रस्तुत करना इस उपन्यास की सबसे बड़ी विशेषता है।